RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

मृण्मूर्तियों में प्रतिबिम्बित लोकजीवन का एक अध्ययन

अवधेश कुमार चौधरी

प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालय, कोटवॉ, जमुनीपुर–दुबावल, इलाहाबाद

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 May 2019

Keywords
सामाजिक प्राणी, प्रतिबिम्बित, लोकजीवन, कला समाज.

ABSTRACT

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है और समाज का व्यक्ति पर प्रभाव अवश्यमेव होता है। इसी रूप में कलाकार भी अपना व्यक्तित्व रखता है और कला के माध्यम से समाज को प्रतिबिम्बित करता है। साहित्य तथा कला समाज के दर्पण हैं। एक में कल्पना की उड़ान तथा घटनाओं का विवेचन मिलता है तो कला-कृतियों में लोकजीवन का रूप दृष्टिगोचर होता है।

प्रस्तावना–

लोकजीवन विचारधारा का प्रभाव सदा से कला पर दृष्टिगोचर होता है। सर्वप्रथम कलाकारों ने प्रस्तर की प्रतिमाएँ तैयार की परन्तु कालान्तर में धातु का प्रयोग करने लगे। इसका कारण यह था कि चल-प्रतिमाओं के लिए धातु का ही प्रयोग अनिवार्य था। अधिकतर अष्टधातु, कांस्य तथा तांबे का प्रयोग मिलता है। प्रस्तर की अचल मूर्तियाँ मन्दिरों में स्थापित होती रही। मौर्य सम्राट अशोक के चौथे शिलालेख में -विमान दसणा, च हस्त दसण च अग्निखंधानि' शब्दों के प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है कि समाज में समय-समय पर जुलूस निकाला जाता था। मध्ययुगी लेखों में उल्लिखित देव प्रतिमा के जुलूस (देवयात्रा) के लिए शासक की ओर से कर लगाया जाता था। राजपुताना के चहमान लेखों में राजाज्ञा प्रसारित करने का उल्लेख है कि देवयात्रा में जनता उत्तम वस्त्राभूषण धारण कर उत्सव में सम्मिलित हो तथा संगीत में भाग ले (यत्रदिने यात्रा भवति तत्रापर समस्तदेवानां सत्क प्रमादा) कुलैः साकल्पैः सुवस्त्रैः वाद्यनृत्य गानादि विधिना यात्रा कर्तव्या-ए0 इ0 भा0 11 पृ0 28) ऐसे सामाजिक उत्सवों पर देवता की धातु-प्रतिमा को ही रथ पर स्थित कर यात्रा सम्पन्न की जाती थी। आजकल भी आषाढ़ मास शुक्लपक्ष के आरम्भ में रथयात्रा का पर्व मनाया जाता है। संक्षेप में यह कहना युक्ति संगत है कि देवताओं की अचल या चल प्रतिमा (प्रस्तर या धातु) समाज के विभिन्न धार्मिक विचार के अनुकूल तैयार होती रही।

समस्त प्रतिमाएँ अथवा आकृतियाँ निम्न प्रकार से अलंकृत मिलती हैं-

(1) वस्त्र

(2) आभूषण

(3) केश-विन्यास

(4) आयुध या प्रतीक

साहित्य पूर्नवलोकन

प्राचीन भारतीय मृणमूर्ति कला में प्रतिबिंबित लोक जीवन पर प्रकांड विद्वानों एवं इतिहास वेत्ताओं ने परत दर परत शोध एवं अध्ययन-अध्यापन बारम्बार अनवरत रूप से किया है,जो कि मृणमूर्ति कला सम्बन्धी पुरावशेष का उल्लेख किया है जो उदाहरण फलस्वरूप प्रस्तुत है।

एच०डी० सांकलिया तथा स्टुअर्ट पिगट ने क्रमशः अपने मूल ग्रन्थ "प्रीहिस्ट्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ़ इंडिया एण्ड पाकिस्तान" तथा प्रीहिस्टोरिक इंडिया" में प्राचीन मानव तथा पशु मृणमूर्तियों को विवेचित किया गया है|

दम्पती

शंqग कला के परवर्ती चरण कुषाणकालीन मृत्तिका कला में दम्पत्ती का अंकन मिलता है। दम्पत्ति से तात्पर्य पति एवं पत्नी के युग्म से है।

अमरकोश एवं हालयुध कोश में यही अर्थ मिलता है। दम्पती फलक कौशाम्बी, अहिच्छत्रा आदि स्थानों से मिले हैं। भारतीय संस्कृति का दृष्टिकोण गृहस्थ जीवन को पल्लवित एवं पुष्पित करना था इसीलिये दम्पती का अंकन कला में किया गया। कौशाम्बी के मृत्तिका टिकरों में दम्पती का सुन्दर चित्रण किया गया है। दम्पत्ती टिकरों में स्त्री पुरुष के वाम भाग में खड़ी दिखाई गई है।

मिथुन

शुंगकालीन मृण्मूर्तिकला में मिथुन फलक सर्वाधिक संख्या में प्राप्त हुये हैं। अमर एवं हलायुध कोश में मिथुन का अर्थ स्त्री एवं पुरुष का जोड़ा अथवा युग्म दिया है- स्त्रीपुंसौमिथुन द्वन्द्वं अथवा स्त्री पुंसायोस्तु युग्ममिथुनं परिकथ्यते सद्भिः।

माता एवं शिशु

स्त्री का मातृत्व रूप सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं मृत्तिका कला में माता का अंकन शिशु के साथ विविध प्रकार से किया गया है। डा.

RRIJM 2015, All Rights Reserved

वासुदेवशरण अग्रवाल ने इस प्रकार के फलकां को तीन प्रमुख भागों में विभक्त किया है-

1. अंकधात्री
2. क्षीरधात्री
3. क्रीडाधात्री

प्रथम प्रकार में बच्चा माँ की गोद में दिखाया गया है। द्वितीय प्रकार में माँ बच्चे को स्तनपान कराती तथा तृतीय प्रकार में बच्चे के साथ क्रीड़ा करती निर्मित की गई है।

गोष्ठीयान

मनोरंजन के विविध साधनों में गोष्ठीयान का अपना अलग ही स्थान है। गोष्ठी यान से तात्पर्य वन विहार व भोज से है जिसे आजकल पिकनिक पार्टी कहा जाता है।

कौटिल्य ने इस प्रकार के विहार के लिये प्रहवण शब्द प्रयुक्त किया है।

वात्स्यायन ने समाज में इस प्रकार की गोष्ठी को उच्च स्थान प्रदान किया है। उत्तर भारत की शंqगकालीन मृत्तिका कला में ऐसे विहार के सुन्दर चित्रण उपलब्ध हैं। ये मुख्य रूप से कौशाम्बी संग्रहालय, इलाहाबाद संग्रहालय, लखनऊ संग्रहालय, भारत कला भवन, राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली, मथुरा संग्रहालय व इण्डियन म्यूजियम कलकत्ता में संग्रहीत हैं।

शुक क्रीडा

स्त्रियों का एक प्रमुख मनोरंजन 'शुक क्रीडा' अथवा पक्षियों के साथ खेलना माना गया है। साहित्य में इसका उल्लेख अनेकशः मिलता है। महाभारत में पक्षी-पालन का सुन्दर वर्णन मिलता है। कालिदास विरचित मेघदूतम् (उत्तर भाग) की विरही यक्षिणी सारिका से बातें करके मन बहलाती है।

आसवपान

आसवपान का उल्लेख नागरिक जीवन के विविध मनोरंजन के अन्तर्गत किया जा सकता है। यह मुख्यतः धनाढय वर्ग का प्रिय व्यसन था।

मृगया

राजपरिवार एवं क्षत्रिय वर्ग का एक प्रिय व्यसन मृगया अथवा आखेट रहा है। साहित्य में मृगया के प्रचुर प्रमाण उपलब्ध हैं।

गजारोहण, अश्वारोहण, रथारोहण

प्रथम-द्वितीय शती ईस्वी के मृत्लकों में मनोरंजन के प्रमुख साधनों में गजारोहण या अश्वारोहण के प्रमाण मिलते हैं। कौशाम्बी की ये मृण्मूर्तियाँ कौशाम्बी संग्रहालय, इलाहाबाद व भारत कला भवन, वाराणसी में संगृहीत हैं।

1. संग्रहालय में सुरक्षित एक फलक में पुरुष हाथी पर सवार है। पुरुष का दाहिना हाथ व मुख खण्डित है। बांये हाथ का अग्रभाग टूटा है। हाथी की सूँड, सिर का दाहिना भाग, सामने का बाँया तथा पीछे का दाहिना पैर खण्डित है। मस्तक पर अलंकृत पट्ट है जो कान के निचले भाग तक दोनों ओर लटक रहा है। हाथी की पीठ पर सुन्दर चित्रण युक्त काठी है। हाथी पर सवार पुरुष की मूर्ति अलग से चिपकाई गई है।
2. गजारोहण के दूसरे फलक में भी पुरुष सवार है। हाथी की सूंड लम्बी, पैर आख कान स्पष्ट हैं, पैरों के निचले भाग में छेद है जिससे ज्ञात होता है कि पहिये लगाकर गाड़ी का रूप बनाया जाता रहा होगा।
3. एक अन्य टिकरे में पुरुष सवार का मुख खण्डित है। दोहरे सांचे से बने फलक में हाथी का मुख, कान, सूंड व पैर स्पष्ट हैं।
4. एक हाथी पर सवार पुरुष की एक अन्य प्रतिमा कौशाम्बी संग्रहालय में सुरक्षित है। हाथी की पीठ पर अलंकृत काठी है। पुरुष का मुख खण्डित है।
5. भारत कला भवन में सुरक्षित एक वृत्ताकार फलक भी जिसके ऊपरी भाग में टाँगने के लिये हुक बना है, उल्लेखनीय हैं। इकहरे सांचे से निर्मित फलक में दाहिनी ओर जाते हाथी पर पुरुष सवार बैठा है। उसके हाथ में अंकुश है तथा पीठ पर डंडे से बंधी पोटली है जिसमें संभवतः खाद्य सामग्री है। हाथी के मस्तक पर अलंकरण है। सूंड, दांत, आंख, कान, पूंछ स्पष्ट हैं। फलक के बाये भाग में चार तथा दाहिने में नीचे एक पुष्प है।
6. इलाहाबाद संग्रहालय में सुरक्षित प्रथम शती ईस्वी के एक फलक में दो गजारोहियों के युद्ध का सुन्दर चित्रण है। हाथियों के पैर उठे हुए हैं।

जंगल के दृश्य

जंगल के दृश्यों का सुन्दर चित्रण मृण्मूर्ति कला में दर्शनीय है। ऐसे फलक प्रथम शती ईसा पूर्व से लेकर प्रथम शती ईस्वी के हैं तथा कौशाम्बी संग्रहालय, इलाहाबाद, लखनऊ संग्रहालय एवं भारत कला भवन, वाराणसी में संगृहीत हैं।

मृण्मूर्तियों के अध्ययन से तत्युगीन स्त्री पुरुषों की वेशभूषा, आभूषण, केशविन्यास, क्रीडा तथा मनोविनोद के साधनों पर प्रकाश पड़ता है। मृत्तिका कलाकारों ने अपनी कला के माध्यम से समाज के ग्रामीण तथा नागरिक दोनों वर्गों की संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया है। सिले हुए वस्त्रों का प्रयोग निश्चय ही समाज के उच्च वर्ग द्वारा किया जाता होगा। शुंगकाल से विशेष रूप से स्त्रियों को आभूषणों से ढक दिया गया है। ये अपनी तकनीक तथा सौन्दर्य के कारण ग्रामीण की अपेक्षा नागरिक प्रतीत होती है। नृत्य, गायन-वादन, मृगया, उद्यानयात्रा, दोला विलास,

RRIJM 2015, All Rights Reserved

शुकक्रीडा करती स्त्री मृण्मूर्तियाँ, मल्ल युद्ध आदि मृण्मूर्ति कला के लोकप्रिय विषय प्रतीत होते हैं। निश्चय ही इसमें समाज के नागरिक वर्ग के मनोरंजन सम्बन्धी विविधता को दर्शाने पर विशेष आग्रह है। यद्यपि मृत्तिका कला को लोककला की संज्ञा दी जाती है। फिर भी इस कला में समाज के सभी वर्गों का समग्र रूप से अंकन हुआ है। जनसाधारण की कला से सम्बन्धित होने के कारण इसमें एक ओर लोक देवी देवताओं का रूपायन मिलता है तो दूसरी ओर नागरिक सभ्यता से सम्बद्ध देवी देवता की मृण्मूर्तियों के साथ-साथ दम्पति-मिथुन, उदयन-वासवदत्ता हरण दृश्य, रावण द्वारा सीता का हरण सम्बन्धित मृण्फलक प्राप्त हुए हैं। मृत्तिका कला का कालक्रमानुसार अध्ययन मानव के धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का ज्ञान कराता है। स्त्री पुरुष मृण्मूर्तियों के आधार पर तत्युगीन वस्त्रों के प्रकार, मणि, मुक्ता, सुवर्ण आदि द्वारा तैयार किये गये अलंकार, भारी भरकम केशविन्यास का ज्ञान प्राप्त होता है। मृण्मूर्तिकारों ने अपन कलाकृतियों के माध्यम से कला के दिव्य आदर्शों से प्रेरित होकर सुन्दर रचनाएँ की जो तत्कालीन जीवन के विविध पक्षों की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- देवा, के0 एवं वी0 मिश्रा- 'वैशाली एक्सकावेशन, ला जनरल प्रेस, इलाहाबाद, 1950
- फ्यूहर, ए0- 'द मान्यूमेंटल एनटिक्विटिल एण्ड इन्सक्रिसन्स इन द नार्दन वेस्टर्न प्राविन्सेस एण्ड अवध', ए0एस0आई0, जिल्द, 1891
- गोयल, श्रीराम- 'प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ' विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1961
- गुप्ता, पी0एल0- 'गंगेटिक वैली टेराकोटा आर्ट', पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी, 1972
- गौड, आर0सी0- 'एक्सकावेशन एट अतरंजीखेड़ा', अर्ली सिविलाइजेशन आफ अपर गंगा बेसिन, दिल्ली, 1983
- हारग्रीव्स, एच0- 'एक्सकावेशन एट पहाड़पुर', बंगाल, एम0ए0एस0आई0, 1938
- जायसवाल, विदुला-
    1. 'कुषाण क्ले आर्ट आफ गंगा प्लेन्स', दिल्ली, 1991
    2. 'एन एथनी आर्कियोलाजिकल व्यूह आफ इण्डियन टेराकोटा', दिल्ली, 1986
- जोशी, नीलकण्ठ, पुरुषोत्तम- 'प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान', पटना, 1977
- जान्सटन, ई0एच0- 'ए टेराकोटा फिगर एट आक्सफोर्ड' जे0आई0एस0ओ0ए0', जिल्द ग्, 1942
- कुमारस्वामी, ऐ0के0- 'म्यूजियम आफ फाइन आर्ट', बुलेटिन नं0 152
- काडरिंगटन, वी- 'इण्डियन एनटिक्विटिज', 1935
- कृष्णन, एम0एस0- 'जियालाजी आफ इण्डिया एण्ड वर्मा', मद्रास, 1960
- क्रैमरिश, स्टैला- 'इण्डियन टेरोकोटा', जे0ओ0आई0एस0ए0, जिल्द, 1935
- काणे, पी0वी0- 'हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र', पूना, 1930-46
- कनिंघगम, ए0- 'रिपोर्ट आन टूअर्स इन सेन्ट्रल दोआब एण्ड गोरखपुर ड्यूरिंग 1874-75 एण्ड 1875-76', ए0एस0आई0, जिल्द ग्प्, वाराणसी, 1812

RRIJM 2015, All Rights Reserved